Patrika Date: 24.01.2019

एब्सट्रैक्ट पेंटिंग का अर्थ समझाकर बनाई पेंटिंग

तीन दिनी आर्ट सेमिनार विश्वांकन की शुरुआत

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

इंदौर ◆ श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय के सांवेर रोड स्थित परिसर में वैष्णव इंस्टिट्यूट ऑफ फाइन आर्ट्स में तीन दिवसीय आर्ट सेमिनार विश्वांकन बुधवार से प्रारंभ हुआ। सेमिनार का उद्घाटन चंडीगढ़ के गर्वनमेंट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट के पूर्व प्राचार्य प्रेम सिंह ने किया। इस अवसर वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय कुलपति डॉ. उपेंद्र धर भी मौजूद थे।

सेमिनार की संयोजक डॉ. संतोष धर ने स्वागत भाषण में बताया, ये आयोजन विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की छुपी हुई कला को एक मंच देने के लिए किया गया है। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. उपेंद्र धर ने कहा, खोज और तकनीक से ही कलाकार अपनी कला को निखार सकता है। मुख्य अतिथि प्रेम सिंह ने योग्यता, तालमेल, निरंतरता, संकल्प और सीएसटी के समागम पर बात करते हुए कई सवालों के जवाब दिए। उन्होंने एब्सट्रैक्ट पेंटिंग का अर्थ समझाते हुए पेंटिंग भी बनाई।

दैनिक भास्कर
25-Jan-2019
इंदौर सिटी भास्कर Page 4

कला एक दरिया है, इसका बहना ही इसकी ताक़त

चंडीगढ़ के वरिष्ठ चित्रकार प्रेम सिंह ने पेंटिंग और प्रकाश पाटीदार ने मूर्तिकला का डेमो दिया

सिटी रिपोर्टर | इंदौर

चंडीगढ़ के 75 वर्षीय चित्रकार प्रेम सिंह का कहना है कि किसी भी समय की चित्रकारी को देखेंगे तो पाएंगे कि वह किसी शैली में बंधी हुई नहीं है। उसमें समय के अंतरालों में बदलाव होते रहे हैं। कला एक ऐसा अथाह दरिया है जो सदैव बहता रहता है, रूकता नहीं। इसका बहना ही इसकी ताक़त है। बहना ही इसकी सृजनात्मकता है। यह बात उन्होंने सिटी भास्कर से कही। वे श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय में दो दिवसीय फ़ाइन आर्ट्स कॉन्क्लेव में शिरकत करने आए थे।

प्रेम सिंह

कला सिर्फ सुंदरता ही नहीं दिखाती, समय-समाज के प्रति संवेदनशील भी बनाती है

डेमो देते हुए प्रकाश पाटीदार

विश्वविद्यालय के इंस्टिट्यूट ऑफ फ़ाइन आर्ट्स के सेमिनार 'विश्वांकन' में उन्होंने पेंटिंग का लाइव डेमो भी दिया। उन्होंने सन फ्लावर्स को कैनवस पर पीले-नीले-हरे रंगों से रचा। उन्होंने कहा कि ये सन फ्लावर्स मैंने वान गॉग की नहीं, अपनी नज़र से रचे हैं। मैं एक कलाकार का सपना देखता हूं और कला की एक बहुत बड़ी परंपरा में अपनी थोड़ी सी भी मौलिकता से कुछ रच सकूं तो अपने कलाकार होने का अहसास होता है। इसलिए मैं

निरंतर रचता हूं। कला का मनोरथ ही यही है कि उसे निरंतर रचा जा सके, निहारा जा सके और साझा किया जा सके। लोग इस तरह एक चित्रकार की नज़र से भी दुनिया की सुंदरता को देख सकें। वह दुनिया जहान को सिर्फ सुंदरता ही नहीं दिखाती बल्कि अपने समय-समाज से संवेदनशील भी बनाती है। कला अपने रूप-रंग से लोगों को एकदूसरे से जोड़ती है। कुलपति उपेंद्र धर ने कहा कि तकनीक से ही कलाकार अपनी कला को निखार सकता है। दूसरे दिन शहर के कलाकार प्रकाश पाटीदार ने मूर्तिशिल्प का लाइव डेमो दिया। डॉ अनु उकांडे ने आभार व्यक्त किया।